International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850 Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 4 | May - 2015 Available online at www.isrj.org

आधुनिक काल में मंच प्रदर्शन

आरती श्योकन्द
असिस्टैन्ट प्रोफेसर , संगीत एवं नृत्य विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र.

Short Profile :
Aarti sheokanda is Assistant Professor at Department of Music and Dance Kurukshetra University, Kurukshetra.

सारांश :

संगीत एक ऐसी कला है, जिसके द्वारा मन के भावों का प्रदर्शन किया जा सकता है संगीत शब्द या ध्वनि पर आधारित कला है । इसमें समय का एक महत्वपूर्ण स्थान है संगीत कला का अस्वादन उसके प्रदर्शन के साथ-साथ ही किया जा सकता है । जबकि चित्रकला, वास्तुकला तथा मूर्तिकला समाप्त होने के बाद ही देखा जाता है तथा उसका आनन्द लिया जाता है, किन्तु संगीत का गायन समाप्त होने के बाद उसका आनन्द स्थूल रूप से समाप्त हो जाता है । सूक्ष्म रूप से दिलोदिमाग में भले ही प्रभाव डालता रहे अथवा अमिट छाप छोड़ जाय । संगीत का ध्वनि मुद्रण या विडियो मुद्रण आदि आधुनिक आविष्कारों के द्वारा उन्हें उसी तरह सुना जाता है किन्तु संगीत कला समय के साथ अपने को ढालती है तथा एक ही राग एक ही गायक वादक के द्वारा प्रतिवार नूतन ढंग से प्रस्तुत किया जाता है । वह तत्कालीन कल्पना शक्ति के उड़ान के पूर्व किये गये मुद्रण में नहीं पाया जायेगा। एक भवन, एक चित्र या साहित्य में यह नूतनता संभव नहीं है क्योंकि इन कलाओं का आधार स्थूल है । इसी कारण संगीत के लिए श्रोता या दर्शक तथा उनका मनोरंजन करने वाला दोनों का एक अटूट संबंध है ।

Article Indexed in :
DOAJ Google Scholar DRJI
BASE EBSCO Open J-Gate

आधुनिक काल में मंच प्रदर्शन

प्रस्तावना :

गायक गाता जाता है तथा श्रोता उसी समय सुनकर उसे प्रोत्साहित करते हैं । जबकि अन्य कलाओं का मूर्तरूप समाप्त होकर सामने आने पर ही उसकी प्रशंसा होती है ।

मंच प्रदर्शन का प्रादुर्भाव संगीत के साथ-साथ ही होना अनिवार्य है । मंच प्रदर्शन का अर्थ बड़े-बड़े सभागार ध्वनि-वर्धक मंच आदि से यहां पर नहीं लिया जाना चाहिए । मंच प्रदर्शन के प्रधान अंग, श्रोता, कलाकार तथा कला स्वयं ही है । जहां पर तीन वस्तुओं का समावेश हुआ, वहीं मंच प्रदर्शन अंकुरित हो हो गया । एक मां अपने शिशु को सुलाने के लिए गाये तो वहां भी मंच प्रदर्शन के तथ्य आ जाते हैं । ''माँ'' रूपी कलाकार ''शिशु'' रूपी श्रोता के लिये लोरी जैसे कला का प्रदर्शन करती है ऐसा कह सकते हैं । इस प्रकार मंच प्रदर्शन का बीजारोपण संगीत कला के साथ ही आरम्भ हो जाता हैं । प्रत्येक कलाकार का उद्देश्य, मूल रूप से अपने कला कौशल से जन साधारण को प्रभावित करना ही होता है । इस कला के प्राग्वैदिक काल के स्वरूप का कुछ प्रमाण शिल्प कला के भग्न अवशेष व कुछ वाद्यों के प्राप्त प्राथमिक एवं अवशेष भाग हैं जो संगीत (गीत, वाद्य तथा नृत्य) की उपस्थिति को दर्शाते हैं ।

जिस प्रकार स्वर का उद्‌गम सृष्टि की उत्पति के साथ ही माना जाता है । जब आदि मानव के साथ सृष्टि का जन्म हुआ तभी से प्रत्येक वस्तु की आवाज में, पत्तों की झरझराहट में, हवा की सनसनाहट में, झरनों की कल-कल में एक स्वर विद्यमान था । जब आदि मानव का पर्दापण पृथ्वी पर हुआ, कुछ दिनों के पश्चात उसने देखा तथा अनुभव भी किया कि सुबह होती है, पुनः दिन होता है, उसी प्रकार रात होती है । जब सुबह होती थी या दिन होता था उस समय उसके अन्दर खुशी का भाव जागृत होता था, जब शाम होती थी और धीरे-धीरे अंधेरा छाता था, उसकी खुशी का भाव धीरे-धीरे अन्धेरे के साथ-साथ भय में बदल जाता था । इसी प्रकार कभी खुशी, कभी भय, कभी कुछ न कुछ घटनाएं उसके साथ घटित होती होगी । उसी प्रकार उसके अन्दर इन्हीं भावों के साथ-साथ कभी कोई प्राकृतिक आवाज सुनकर गाने की इच्छा होती होगी । उस समय यह भी सम्भव है कि इसकी आवाज सुनकर कुछ और भी

उसके अन्य साथी सुनने के लिए उपस्थित होते होंगे, इसी प्रकार मंच प्रदर्शन की यात्रा आरम्भ हुई होगी ऐसा प्रतीत होता है ।

आधुनिक काल में मंच प्रदर्शन

1. मंच प्रदर्शन का लघु रूप
2. मंच प्रदर्शन का मध्य रूप
3. मंच प्रदर्शन का विस्तृत रूप

1. मंच प्रदर्शन का लघु रूप : लघु का अर्थ होता है छोटा, अर्थात मंच प्रदर्शन का छोटा रूप । प्रायः इस तरह के कार्यक्रम बहुत कम समय में निश्चित होते हैं । जब किसी व्यक्ति के द्वारा, किसी संगीत प्रेमी को यह ज्ञात होता है कि अमुक कलाकार बहुत अच्छा गा रहा है या बजा रहा है, उसका कार्यक्रम या कोई कलाकार उस स्थान में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने आया है तो कुछ रसिक श्रोता अपने घर पर उसे आमन्त्रित करते है और उसका कार्यक्रम रखते हैं । ऐसा प्रायः तभी होता है जब किसी कलाकार की कला श्रोताओं के दिल में उतरती है तथा श्रोताओं की इच्छा होती है कि इस कलाकार से ये राग या किसी राग की अमुक बंदिश या कोई ठुमरी या टप्पा सुनें, क्योंकि बड़े कार्यक्रमों में कलाकार के पास समय का अभाव होता है वह सबकी फरमाइश पूरी नहीं कर सकता, अतः संगीत प्रेमी श्रोता ऐसा कार्यक्रम बनाते हैं । जिस व्यक्ति के घर में यह कार्यक्रम होता है वही व्यक्ति इस कार्यक्रम की पूरी व्यवस्था सम्भालता है ।

प्रायः इस तरह के कार्यक्रमों में श्रोताओं की संख्या कम होती है। इसमें कलाकार व्यवहारिकता को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम को प्रस्तुत करता है । कभी-कभी उसे सभी व्यवस्थाएं मिलती है और कभी-कभी हालात से समझौता भी करना पड़ता है । जैसे धन की ज्यादा मांग नहीं करता, घर का मुखिया स्वेच्छा से जो कुछ भी दे देता है वह उसे सहज स्वीकार कर लेता है । इससे सम्बद्ध व्याख्यान यहां प्रस्तुत है जो संगीत कलाविहार नामक पत्रिका में दिया हुआ है। ''श्री काका वाटपे'' जो बचपन से ही संगीत प्रेमी रहे और जिन्होंने अपने चाचा जी से विरासत में गाना पाया था । एक दिन ऐसे ही संगीत प्रेमी से मनो विनोद

कर रहे थे, उनमें यह विचार आया कि खां साहब अब्दुल करीम खां साहब जैसे महान् गायक हमारे यहां रहते है- परन्तु हमें उनका गायन सुनने को नहीं मिला । इसलिए एक म्युजिकल सर्कल स्थापित किया जाय और जहां तक हो सके हर महीने खां साहब का गायन सुनने का प्रयत्न किया जाय । बड़ी मेहनत के बाद 18/19 सज्जन इकट्ठे हुए । हर एक के घर बारी-बारी से गायन हो तथा इस दिन का आवश्यक व्यय हो जैसे प्रकाश प्रबन्ध, चाय आदि वही करे, जिसके घर गायन होगा । इतना सब तय हो गया- किन्तु सभी के मन में डर इस बात का था कि खां साहब 17/18 रूपयों में कैसे गायेंगे? अन्त में श्री वाटपे जी ने अपने दो मित्रों के साथ सलाह की कि पहले जाकर पूछ तो ले । खां साहब उदार हृदय के हैं, हो सकता है कि वे स्वीकार कर लें।

फिर काका साहब और उनके स्नेही साहस कर खां साहब के बंगले पर गये उनसे कह दिया कि इतने पैसे जमा हों सकेंगे । खां साहब ने चुप चाप सुन लिया तब बोले- इतने दिन से मैं मिरज में रह रहा हूँ परन्तु इस तरह मेरा गाना सुनने की अपनी हार्दिक इच्छा किसी ने प्रदर्शित नहीं की । कभी-कभी एकाध अमीर घराने के लोग ही मेरा गायन कराते है । ऐसी कोई बात नहीं है । तुम सब तरूण छात्र हो । पुस्तकों या अन्य किसी कारण से तुमको जो पैसे मिलते हैं उनमें से कुछ पैसे बचाकर उस रकम से तुम लोग मेरा गाना सुनना चाहते हो। यह सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई । अतः लेन देन की बात अलग रखो । परन्तु किसके घर गायन का कार्यक्रम होगा और कब होगा, यह हर महीने के अन्तिम शनिवार को मुझको बता देना, मैं वहाँ आकर गाऊँगा ।''

खाँ साहब के बंगले से गांव प्रायः आधे से अधिक मील के फासले पर था । हर महीने के आखिरी शनिवार को खाँ साहब अपने साथ संगत करने वालों के साथ लालटेन पकड़े हुए किसी शार्गिद के साथ पैदल नियमित रूप से आते थे । मृत्यु के पहले डेढ़ वर्ष तक वे नियमित रूप से आया करते थे और इन लोगों को अपना गायन सुनाया करते थे । यह क्रम तभी टूटता था जब वे किसी कार्यक्रम के तहत दूसरे गांव जाते । श्री वाटपे जी बताते थे कि गायन समाप्त होने पर एक लिफाफे को स्वीकार करते, परन्तु उसे खोल कर न देखते थे कि

अन्दर क्या है । इस तरह की और भी कई कहांनियां है जो खां साहब की कला तथा उनके ऊँचे व्यक्तित्व को दर्शाती है और सभी कलाकारों को इससे सीख भी मिलती है कि कलाकार को अपनी कला को प्रस्तुत करने के लिए सच्चे श्रोताओं की जरूरत होती है इसके अतिरिक्त अन्य वस्तुओं की जरूरत नहीं होती है ।

इस तरह के प्रदर्शन में कलाकार एक बड़े से हॉलनुमा रूप अर्थात् घर में जो कमरा बड़ा होता है उसी में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करता है जिसमें मंच के रूप में एक दरी और उसके ऊपर सफेद चादर बिछाकर या सम्भव हो तो दो या तीन चौकियां बिछाकर उस पर दरी डाल कर, उसके ऊपर सफेद चादर डाल कर उसे मंच का रूप दे देते हैं । कार्यक्रम का यह रूप प्राचीन है क्योंकि पिछले अध्यायों में इस तरह के कार्यक्रम का प्रमाण प्राप्त होता है । इस कार्य में विद्युतीय माध्यम कहीं-कहीं प्राप्त होता है और कहीं-कहीं प्राप्त नहीं होता । इसलिए कलाकार को काफी परेशानियां का सामना करना पड़ता है । मंच प्रदर्शन के इस रूप में कलाकार और श्रोताओं के बीच दूरी कम होती है अर्थात् दोनों एक दूसरे के बहुत करीब होते हैं । इस वजह से श्रोता कलाकार से कोई बंदिश या ठुमरी, भजन की फरमाइश कर बैठता है जिसे पूरा करना कलाकार का परम कर्तव्य है। इस तरह के कार्यक्रमों में कलाकार तथा संगतकार दोनों को उनकी प्रस्तुतिकरण के बीच-बीच में श्रोताओं द्वारा वाहवाही मिलती है । जिसके कारण वह खुश होकर और भी अच्छी-अच्छी चीजे प्रस्तुत करता है तथा उसे प्रोत्साहन मिलता है ।

स्टूडियों में या रेडियों स्टेशन पर जो रिकार्डिंग होती है वह भी लघु मंच प्रदर्शन की श्रेणी में आ सकता है । क्योंकि रिकार्डिंग के समय उस स्टूडियों में कलाकार संगतकार तथा रिकार्डिंग करने वाला ही वहां मौजूद होता है । रिकार्डिंग के समय यह प्रदर्शन लघु तथा प्रसारण के समय विस्तृत रूप धारण कर लेता है कारण कि प्रसारण के समय सुनने वाले ज्यादा होते हैं । यह ऐसा मंच प्रदर्शन है जिसमें श्रोता कलाकार के सम्मुख नहीं होते ।

इस तरह के कार्यक्रमों में नामी कलाकारों के अतिरिक्त नवोदित कलाकारों को भी आमंत्रित किया जाता है तथा कार्यक्रम में श्रोताओं के रूप में कलाकार तथा रसिक श्रोता दोनों ही उपस्थित होते हैं ।

2. मंच प्रदर्शन का मध्य रूप : मध्य का अर्थ होता है न छोटा और न ही बड़ा अर्थात् तुलनात्मक रूप से दोनों की विशेषताओं वाला। यह मंच प्रदर्शन क्षेत्रीय स्तर पर होता है । जिसके अन्तर्गत ख्याति प्राप्त कलाकारों के साथ-साथ उस क्षेत्र या शहर के अच्छे कलाकारों को भी अपनी कला को प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त होता है । इस तरह के कार्यक्रम में श्रोताओं के रूप में संगीत के विद्यार्थी तथा अन्य संगीत रसिक इसमें प्रस्तुत संगीत लहरी का रसास्वादन करने के लिए उपस्थित रहते हैं । इस तरह के प्रदर्शन ही आज के समय में देखने को मिल रहे हैं ।

इस तरह के कार्यक्रम प्रायः किसी महापुरूष की याद में किसी संस्था के वार्षिकोत्सव इत्यादि पर निर्धारित किये जाते हैं । इस तरह के कार्यक्रम जैसे गुनिदास संगीत समारोह, चतुर लाल संगीत समारोह, विष्णु दिगम्बर जयन्ती, रेडियों संगीत सम्मेलन या स्पीक मैके इत्यादि कार्यक्रम हैं ।

इस तरह के कार्यक्रम के लिए काफी सोच विचार की आवश्यकता होती है जिसमें कार्यक्रम का व्यवस्थापरक, प्रेक्षागृह बुक करना तथा कलाकार निश्चित करना इत्यादि सारी जिम्मेदारियां निभाता है । उनके रहने की व्यवस्था करना ताकि कलाकार को कोई परेशानी न हो । व्यवस्थापरक के पास उसके कुछ सहयोगी मित्र होते हैं जिनके लिए अलग-अलग कार्य भार सौंपता है कि अमुक व्यक्ति कार्यक्रम का प्रचार प्रसार की व्यवस्था सम्भालेगा, अमुक व्यक्ति प्रेक्षागृह निश्चित करेगा, अमुक व्यक्ति कलाकार तथा संगतकार के ठहरने के स्थान से प्रेक्षागृह तक ले आने की व्यवस्था करेगा या क्षेत्रीय कलाकार के घर के प्रेक्षागृह तक ले जाने की व्यवस्था करेगा। एक दो व्यक्ति माइक्रोफोन इंजीनियर के पास रखेगा, ताकि कलाकार की कला श्रोताओं तक अच्छी तरह पहुंच रही है कि नहीं, इंजीनियर को यह बतायेगा कि इस तरह

की आवाज चाहिए । इस तरह के कई कार्य है जो मंचप्रदर्शन के लिए आवश्यक होते हैं । जो व्यवस्थापक अपने सहयोगी मित्रों की सहायता से करता है ।

इस तरह के कार्यक्रमों में कलाकारों के कला प्रस्तुतीकरण के पहले यह भी निश्चित किया जाता है कि किस कलाकार को पहले या किस कलाकार को दूसरे तथा किस कलाकार को अन्त में प्रस्तुतिकरण का अवसर दिया जायेगा तथा साथ-साथ कितना समय एक कलाकार को दिया जायेगा । जिससे कलाकार तथा श्रोताओं को कोई परेशानी न हो ।

इस तरह के मंच प्रदर्शन में कलाकारों तथा श्रोताओं की संख्या लघु मंच प्रदर्शन से ज्यादा होती है । इसलिए इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए प्रेक्षागृह का चुनाव किया जाता है ।

3. मंच प्रदर्शन का विस्तृत रूप : विस्तृत का अर्थ होता है बड़ा अर्थात् मंच प्रदर्शन के 'लघु तथा मध्य दोनों से बड़ा' अर्थात् यह मंच राष्ट्रीय स्तर का होता है । इसमें क्षेत्रीय कलाकारों के अतिरिक्त बाहर के ख्याति प्राप्त कलाकार भी भाग लेते हैं । इस तरह के मंच प्रदर्शन में कलाकारों तथा श्रोताओं की संख्या लघु मंच प्रदर्शन तथा मध्य मंच प्रदर्शन दोनों की तुलना से ज्यादा होती है ।

इस तरह के मंच प्रदर्शन के लिए काफी सोच विचार की आवश्यकता होती है । यह कार्यक्रम दो दिन से पांच दिन या इससे अधिक दिन तक का भी हो सकता है । कलाकारों तथा श्रोताओं की संख्या को ध्यान में रखते हुए, इस तरह का प्रदर्शन किसी प्रेक्षागृह में सम्भव नहीं । इस लिए पंडाल की व्यवस्था करनी पड़ती है । इसके साथ-साथ कलाकारों के ठहरने, उसके आने जाने इत्यादि की व्यवस्था व्यवस्थापक को सम्भालनी पड़ती है । कार्यक्रम का प्रचार प्रसार, निमंत्रण पत्र, कलाकारों का चुनाव, कार्यक्रम का समय निर्धारण इत्यादि कार्य बहुत सावधानी से करना पड़ता है ।

इसके लिए एक संस्था या सोसाइटी बनानी पड़ती है जिसमें अनेक सदस्य होते है और वे अलग-अलग कार्यभार सम्भालते हैं ।

आधुनिक काल में मंच प्रदर्शन

संगीत के किसी विषय पर चर्चा हेतु 'सेमिनार' आयोजित होता है जो कई दिन तक चलता रहता है । यह प्रदर्शन भी विस्तृत मंच प्रदर्शन के अन्तर्गत आता है । जिसमें चर्चा हेतु दूर-दूर से कलाकार तथा विद्वान एकत्रित होते हैं तथा वे अपने-अपने विचार व्यक्त करते है। इसमें भी श्रोता उनके विचारों को सुनने के लिए एकत्रित होते हैं। इस तरह के समारोहों में जिस विषय पर चर्चा होती है उस विषय से सम्बन्धित प्रश्नोतरी भी होती है अर्थात् श्रोताओं में से कोई प्रश्न पूछता है जिसका उतर मंच पर विराजमान कलाकार या विद्वान देते हैं इस तरह का प्रदर्शन भी मंच प्रदर्शन के विस्तृत श्रेणी में आता है ।

इस तरह का कार्यक्रम किसी महान संत, संगीतज्ञ इत्यादि की याद में किया जाता है जैसे हरिदास संगीत समारोह-वृन्दावन, तानसेन संगीत समारोह - ग्वालियर, सवाई गन्धर्व संगीत समारोह-पुणे, हरिवल्लभ संगीत समारोह-जालन्धर तथा ध्रुपद मेला-वाराणसी इत्यादि ।

विद्युतीय माध्यम

आधुनिक काल में वैज्ञानिक उपकरणों के विकास के कारण विश्व में एक प्रकार की उथल-पुथल मच गयी है । स्थान समय आदि की दूरियां के प्रभाव धीरे-धीरे लुप्त हो गये । कई उपकरण ऐसे है जिनके द्वारा हम देश विदेश के समाचार कला प्रदर्शन आदि को एक स्थान पर बैठ कर देख सकते हैं । रेडियों तरंगों के माध्यम से ध्वनि स्थानान्तरित करने लगी तथा टेलीविजन द्वारा हम समाचारों को पर्दे पर देखने सुनने भी लगे । कई देशों की संस्कृति, कला आदि का प्रभाव परस्पर हमारी कलाओं को भी प्रभावित करने लगा । प्राचीन काल में आक्रमणकारी विजेताओं की कला का ही प्रभाव संस्कृति तथा कला पर असर किया करती थी । लेकिन अब ऐसा नहीं है पर आधुनिक काल में तो पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति हमारी वेशभूषा पर ही नहीं कलाओं पर भी अपना प्रभाव दिखा रही है । आजकल का पॉप म्यूजिक एवं नृत्य इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है । जिसके कारण हमारी शास्त्रीय संगीत का महत्व कम होता दिखाई दे रहा है । एक ओर वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा हमारे संगीत को काफी लाभ पहुंचा है तो दूसरी ओर हमारा शास्त्रीय संगीत भी अपने स्वरूप को धीरे-धीरे लोकरूचि के अनुसार सुगम

बनाने की चेष्टा में है । मंच प्रदर्शन में आज शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत गजल, गीत, पाश्चात्य संगीत इनकी अधिक मांग है । जो सुगम संगीत में आज देखने को मिलता है कि मंच को सजाकर, रंग बिरंगी रोशनियों, ज्यादा से ज्यादा वाद्य वृन्द का प्रयोग कर तथा शब्द जाल से चित्ताकर्षक बनाया जाता है ।

इस आधुनिक संगीत का गुण उतेजना प्रधान होता है । जबकि शास्त्रीय संगीत का गुण सात्विक तथा शक्ति प्रदान करना है । उसी के अनुसार इसकी प्रस्तुति में कम से कम वाद्य प्रयुक्त होते है । यह अवश्य है कि वैज्ञानिक उपकरण जिनका प्रयोजन ध्वनि से सम्बन्धित है उनका प्रयोग किया जाता है । संगीत से सम्बन्धित वैज्ञानिक उपकरण:

1. प्रेक्षागृह 2. रोशनी 3. माईक 4. ध्वनि मुद्रक यंत्र ।

प्रेक्षागृह तथा ध्वनियंत्रित मंच

सफल मंच प्रदर्शन के लिए अच्छे प्रेक्षागृह का होना अति आवश्यक है । प्रेक्षागृह में कार्यक्रम प्रस्तुतीकरण तक ही नहीं बल्कि अभ्यास कक्ष, बिजली पानी की व्यवस्था तथा श्रोताओं के बैठने की व्यवस्था इत्यादि का होना भी आवश्यक है । इसके साथ-साथ सफाई होनी चाहिए तथा मंच फूलों से अच्छादित होना चाहिए । मंच पर कलाकार के इच्छानुसार आसन बनना चाहिए अर्थात् कुछ कलाकार गद्दीदार मंच पसंद नहीं करते, अर्थात् एक योगी, ध्यान या आराधना के समय जैसा आसन होना चाहिए क्योंकि ज्यादे गद्दीदार मंच पर कलाकार को आलस्य आता है तथा वाद्य यंत्र भी उछलते है जिससे प्रदर्शन में बाधा पहुंचती है ।

मंच प्रदर्शन के लिए जब प्रेक्षागृह निश्चित किया जा रहा हो, उस समय प्रेक्षागृह की ठीक से जांच करनी चाहिए कि प्रति ध्वनि का उपद्रव तो इस प्रेक्षागृह में नहीं होता । क्योंकि प्रेक्षागृह का निर्माण करते समय यह ध्यान में रखा जाता है कि कार्यक्रम के समय प्रतिध्वनि का उपद्रव न हो अर्थात् जिसे आजकल echo कहते है । क्योंकि जिस प्रेक्षागृह में प्रतिध्वनि का उपद्रव होता है वहां सारा कार्यक्रम खराब हो जाता है ।

इसलिए प्रतिध्वनि रहित अर्थात् ध्वनि नियंत्रित प्रेक्षागृह होना चाहिए। इसके साथ-साथ ऐसा मंच होना चाहिए कि जहां से कलाकार तथा श्रोता दोनों एक दूसरे को दिखाई दें । अर्थात् श्रोता को कलाकार तथा कलाकार को श्रोता साफ-साफ दिखाई दें ।

इनके साथ-साथ प्रेक्षागृह में अभ्यास कक्ष होना अति आवश्यक है । जहाँ कलाकार तथा संगतकार कार्यक्रम के पहले थोड़ा वाद्य यंत्र मिला ले तथा एक दूसरे से परिचित हो जाएं । अगर समय मिले तो अभ्यास कर लें जिससे आवाज स्थिर हो जाए या वाद्य यंत्र सही मिल जाए । क्योंकि कभी-कभी सीधे मंच पर कलाकार जब गायन या वादन प्रस्तुत करता है, उस समय उसकी आवाज हिलती है तथा वाद्य यंत्र भी ठीक से मिल नहीं पाते, मंच पर वाद्य यंत्र मिलाने पर श्रोता ऊब महसूस करते है । जिसके कारण कलाकार को अपना कार्यक्रम जमाने में काफी समय लगता है । इसलिए कार्यक्रम के पहले अभ्यास रूप में वाद्य यंत्र मिला कर अभ्यास कर लेना चाहिए ।

रोशनी

कार्यक्रम में मंच पर रोशनी होनी चाहिए जैसा कि देखने को मिलता है । कार्यक्रम में मंच पर आसीन कलाकार के ऊपर तो काफी रोशनी होती है परन्तु कहीं-कहीं ऐसा देखा जाता है कि मंच पर रोशनी है परन्तु श्रोताओं के बैठने के स्थान पर रोशनी रहते हुए भी कार्यक्रम प्रस्तुतीकरण के समय रोशनी बुझा दिया जाता है । इससे श्रोताओं को तो कोई प्रभाव नहीं पड़ता परन्तु कलाकार को बहुत प्रभाव पड़ता है, क्योंकि उस समय कलाकार को श्रोता नहीं दिखाई देते । इसलिए कलाकार यह अनुमान नहीं लगा पाता कि हमारी कला का श्रोताओं के ऊपर क्या प्रभाव पड़ रहा है । क्योंकि कलाकार श्रोताओं के चेहरे के भाव को देखते हुए अपनी कला को आकर्षक मोड़ देते हुए अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करता है । इस बात को ध्यान में रखते हुए श्रोताओं पर भी हल्की रोशनी देनी चाहिए ।

माइक (ध्वनि वर्धक यंत्र)

आधुनिक काल में मंच प्रदर्शन

आज के समय में माइक की आवश्यकता हर कलाकार को होती है । पहले के समय में माइक नहीं होते थे और कलाकार को काफी शक्ति व्यय करनी पड़ती थी तथा आवाज को अभ्यास द्वारा ताकतवर बनाना पड़ता था, आवाज में गंभीरता, मुलायमियता इत्यादि लाने के लिए काफी मेहनत करनी पडती थी । परन्तु आजकल माइक में ऐसी-ऐसी व्यवस्था है कि ये बातें कुछ हद तक माइक की सहायता से सम्भव करने की कोशिश की जा रही है । माइक का मुख्य कार्य है कि मुख्य आवाज को बढाकर श्रोताओं तक पहुंचाना । अर्थात् कार्यक्रम में चाहे जितने श्रोता हों हर श्रोता को कलाकार की आवाज या उसके वाद्य की आवाज साफ-साफ सुनाई देती है । पहले के समय में कलाकार को इसके लिए काफी मेहनत करनी पड़ती थी और बारीक हरकतें सभी श्रोताओं को सुनाई नहीं देती थी परन्तु माइक की सहायता से बारीक से बारीक हरकत भी हर श्रोता आसानी से सुन लेता है इसलिए आधुनिक काल में कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए माइक्रोफोन बहुत ही उपयोगी उपकरण है ।

ध्वनिमुद्रक यंत्र

आधुनिक युग में ध्वनि मुद्रण का काफी विस्तार हो गया है । इसलिए हम किसी भी कलाकार की आवाज या उसके कलाकौशल को इसकी सहायता से सुन सकते हैं । पहले के समय में यह सुविधा उपलब्ध नहीं थी, किसी कलाकार को सुनने के लिए कार्यक्रम में जाना आवश्यक होता था परन्तु आज किसी श्रोता को किसी कार्यक्रम में किसी कारण वश उपस्थित होने का अवसर नहीं मिलता तो अपने सहयोगी श्रोता को कार्यक्रम में रिकार्डिंग करने के लिए टेपरिकार्डर देता है तथा बाद में वह उस कलाकार का गायन या वादन उस उपकरण के माध्यम से सुन लेता है । इसलिए आज यह बहुत ही लोकप्रिय है । इसकी शुरूआत 20वीं शताब्दी में ही हो गयी थी । ग्रामोफोन, कैसेट, एल.पी. रिकार्ड इत्यादि । आज तो सी.डी. भी उपलब्ध है ।

इसमें सिर्फ सुन सकते है परन्तु आज वीडियों रिकार्डिंग का प्रचलन भी काफी हो गया है । जिसकी सहायता से कलाकार को देखते हुए उसके गायन को कभी भी सुन सकते हैं ।

इसलिए कलाकार का काफी नुकसान होता है । एक तरफ तो कलाकार के कला कौशल का प्रचार-प्रसार हो रहा है, देश के कोने-कोने में कैसेट इत्यादि द्वारा उसकी कला को सुन रहे हैं । परन्तु प्रत्यक्ष रूप में मंच प्रदर्शन में समय श्रोताओं की कमी कलाकार को बहुत खटकती है । इसका कारण यह है कि किसी कलाकार को सुनने के लिए आसानी से कैसेट या वीडियो रिकार्डिंग मिल जाती है । इसलिए वह घर पर ही इन आधुनिक उपकरणों की सहायता से किसी कलाकार को सुन सकते है ।

सन्दर्भ सूची

1. संगीत विशारद, पं. भातखण्डे पृ. 15
2. भारतीय संगीत का इतिहास, उमेश जोशी, पृ. 7
3. भारतीय संगीत का इतिहास पृ. 7-8
4. संगीत रत्नाकर, प्रथम अध्याय, श्लोक 6, पृ. 113
5. भारत और भारतीय नाट्य कला सुरेन्द्र नाथ दीक्षित, पृ. 459
6. नाट्य शास्त्र विश्वकोष (चतुर्थ संस्करण, राधावल्लभ त्रिपाठी) पृ. 1129-21
7. भरत और भारतीय नाट्य कला सुरेन्द्र नाथ दीक्षित, पृ. 459
8. नाट्य शास्त्र का इतिहास - डॉ॰ पारसनाथ द्विवेदी, पृ. 442
9. नाट्य शास्त्र विश्वकोष - राधा वल्लभ त्रिपाठी, पृ. 715
10. संगीत कला विहार (कलाकारों के किस्से प्रो. बी.आर. देवधर अगस्त 1963) पृ. 292